भगत नामदेव - सबद १९

तीनि छंदे खेलु आछै ॥

रागु टोडी, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ७१८

तीनि छंदे खेलु आछै ॥१॥ रहाउ ॥
कुमभार के घर हांडी आछै राजा के घर सांडी गो ॥
बामन के घर रांडी आछै रांडी सांडी हांडी गो ॥१॥
बाणीए के घर हींगु आछै भैसर माथै सींगु गो ॥
देवल मधे लीगु आछै लीगु सीगु हीगु गो ॥२॥
तेली कै घर तेलु आछै जंगल मधे बेल गो ॥
माली के घर केल आछै केल बेल तेल गो ॥३॥
संतां मधे गोबिंदु आछै गोकल मधे सिआम गो ॥
नामे मधे रामु आछै राम सिआम गोबिंद गो ॥४॥३॥

सार: अस्तित्व खंडित नहीं है, बल्कि, यह हमारी संकीर्ण दृष्टि है जो इसे ऐसा दिखाती है। जीवन अनगिनत वस्तुओं, परिस्थितियों और पहचानों के रूप में दिखाई देता है, लेकिन यह सब एक असीम सागर की सतह पर उठती अस्थायी लहरों के समान हैं। जो अलग प्रतीत होता है, वह अक्सर केवल रूप, भाषा या परिस्थितियों का ही भेद होता है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, विविधता केवल बाहरी रूप के स्तर पर वास्तविक है परंतु एकता उसके मूल तत्व के स्तर पर सत्य है। इसे देख पाना ही विभाजन से समग्रता की ओर और सतही बोध से आंतरिक पहचान की ओर बढ़ना है।

तीनि छंदे खेलु आछै ॥१॥ रहाउ ॥
यह नाटक तीन लय में प्रकट होता है, अस्तित्व के तीन क्षेत्र, सृष्टि, पालन और विनाश, सभी पदार्थ और जीवन इसी चक्र से गुज़रते हैं। (१)(विराम)

कुमभार के घर हांडी आछै राजा के घर सांडी गो ॥
कुम्हार के घर में मिट्टी का घड़ा है, राजा के घर में ऊँटनी है। यह दर्शाता है कि परिस्थितियाँ व्यक्ति की बाहरी पहचान निर्मित करती हैं, परन्तु मूल रूप से हम सब एक ही तत्व से बने हैं और एक ही जीवन-चक्र से गुजरते हैं।

बामन के घर रांडी आछै रांडी सांडी हांडी गो ॥१॥
पुजारी के घर, वह है जिसने अपने जीवनसाथी को खो दिया है, वहाँ एक विधवा है, एक ऊँट है और मिट्टी का घड़ा है। यह दृश्य जीवन के सार का प्रतीक है, विधवा जीवन की नश्वरता को दर्शाती है, ऊँट जीवन की क्षणभंगुरता को दिखाता है, मिट्टी का घड़ा जीवन की कोमलता का संकेत देता है और पुजारी का घर ज्ञान के क्षेत्र के रूप में कार्य करता है, जो इन विषयों पर स्पष्टता प्रदान करता है। (१)

बाणीए के घर हींगु आछै भैसर माथै सींगु गो ॥
किराना के बनिया के घर में हींग है और भैंस के सिर पर सींग हैं। यह जीवन-निर्वाह के गुणों का प्रतीक है, व्यापारी की भौतिक वस्तुएँ और पशु की रक्षा-शक्ति के साधन, उनके तरीक़े अलग-अलग हैं लेकिन जीवन-धारण का सार एक ही है।

देवल मधे लीगु आछै लीगु सीगु हीगु गो ॥२॥
मंदिर के भीतर पत्थर की मूर्ति है, वहाँ मूर्ति है, सींग और हींग हैं। यह दृश्य जीवन के भ्रमों को प्रस्तुत करता है, मूर्ति अंतरात्मा को दर्शाती है, सींग सहज प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, हींग इंद्रियों का और मंदिर शरीर का प्रतीक है, जो इन शक्तियों में सामंजस्य स्थापित करता है। (२)

तेली कै घर तेलु आछै जंगल मधे बेल गो ॥
तेली के घर में तेल होता है, जंगल में बेल की लताएँ होती हैं। यह दर्शाता है कि विकास अनेक रूपों में प्रकट होता है, फिर भी पोषण और उन्नति का मूल सार स्थिर रहता है।

माली के घर केल आछै केल बेल तेल गो ॥३॥

माली के घर में केला होता है, वहाँ केला है, बेल है और तेल है। यह संदर्भ जीवन की लय को प्रकट करता है, केला जन्मजात गुणों का प्रतिनिधित्व करता है, बेल अनुभवात्मक ज्ञान के सहारे को दर्शाती है, तेल जीवन के सार की समझ का संकेत है और माली का घर इस संसार का प्रतीक है जहाँ समस्त अस्तित्व एक ही पारिस्थितिक लय के प्रवाह में बंधा हुआ है। (३)

संतां मधे गोबिंदु आछै गोकल मधे सिआम गो ॥
संतों के बीच उसे 'गोबिंद' के नाम से जाना जाता है, गोकुल के निवासियों के बीच उसे 'श्याम' के नाम से पुकारा जाता है। यह दर्शाता है कि कैसे परिवेश उसी सर्वव्यापी शक्ति के प्रति विविध धारणाओं को आकार दे सकता है परंतु इस चेतना का मूल तत्व एक ही है।

नामे मधे रामु आछै राम सिआम गोबिंद गो ॥४॥३॥
नामदेव कहते हैं कि उनके भीतर सर्वव्यापी एकत्व विद्यमान है, जो राम, श्याम और गोबिंद, सभी को अपने में समाहित किये हुए है। यह नाम इस तथ्य को दर्शाते हैं कि उस सर्वव्यापी सत्ता को विविध तरह से संबोधित और अनुभव किया जा सकता है परंतु जैसे-जैसे चिंतन गहराता है, यह अनेक विविधताएँ अंततः एक ही उपस्थिति में विलीन हो जाती हैं। (४)(३)

तत्त्व: भक्त नामदेव हमें ऐसी चेतना अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं, जहाँ नाम, प्रतीक और रूप एक ही, सर्वव्यापी सत्ता में विलीन हो जाते हैं। वह हमारे दैनिक जीवन में संबंधों को दिखाते हैं, जैसे घड़ा और कुम्हार, तेल और तेली के बीच और बताते हैं कि हमारे जीवन में जो प्रकट होता है, वह उसी का प्रतिबिंब है जिसे हमने भीतर पोषित किया है। यह उपस्थिति सबसे अधिक हमारे सत्यपूर्ण आचरण में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यद्यपि नाम अलग-अलग हो सकते हैं, जैसे राम, श्याम और गोविंद, फिर भी पहचान एक गहरे आत्मीय संबंध के रूप में उभरती है, जैसे मछली के लिए जल और फूल के लिए उसकी सुगंध होती है।यही एकता हमें उस मूल सार तक पहुँचाती है जो हम सबको जोड़ता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com